Mains Matrix

Table of Content

1. **चमक को छूना: भारत की सौर ऊर्जा सफलता और चुनौतियाँ**
2. **वैश्विक तेल कीमतों में गिरावट से पूंछ में हवा और भारत पर इसका प्रभाव**
3. **सदमा, डरावनी; आतंक: दलित कहानियाँ साहित्यिक जगत को कैसे हिला रही हैं**

टैपिंग द शाइन: भारत की सौर ऊर्जा की सफलता और चुनौतियाँ

परिचय

भारत की सौर ऊर्जा यात्रा वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा परिवर्तन की सबसे उल्लेखनीय कहानियों में से एक है। एक दशक पहले तक सीमित योगदानकर्ता रहा भारत आज विश्व का **तीसरा सबसे बड़ा सौर ऊर्जा उत्पादक देश** बन गया है, जिसने उसे वैश्विक हरित ऊर्जा संक्रमण का प्रमुख भागीदार बना दिया है। हालांकि, **महत्त्वाकांक्षी जलवायु लक्ष्यों और वास्तविक प्रगति के बीच की खाई** को पाटना अब भी एक बड़ी चुनौती है।

1. भारत की सौर ऊर्जा सफलता की कहानी

लागत प्रतिस्पर्धात्मकता:

2017 के आसपास सौर ऊर्जा की प्रति यूनिट लागत कोयले से कम हो गई, जिससे सौर ऊर्जा **व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य** बन गई और बड़े पैमाने पर निजी निवेश आकर्षित हुआ।

वैश्विक नेतृत्व:

2024–25 तक भारत **वैश्विक स्तर पर तीसरे स्थान पर** है, चीन और अमेरिका के बाद, और जापान को पीछे छोड़ चुका है।

निर्माण क्षमता में वृद्धि:

भारत की **सौर मॉड्यूल निर्माण क्षमता 2014 में 2 गीगावाट (GW)** से बढ़कर **2025 तक 100 GW (अनुमानित)** हो जाएगी, जिसमें लगभग **85 GW की वास्तविक उत्पादन क्षमता** पहले से मौजूद है।

स्थापित क्षमता:

सितंबर 2025 तक भारत की घरेलू **स्थापित सौर क्षमता लगभग 117 GW** तक पहुँच गई है, जो **राष्ट्रीय सौर मिशन** और **नवीकरणीय ऊर्जा विकास योजनाओं** के तहत तेज प्रगति को दर्शाती है।

2. महत्त्वाकांक्षा और वास्तविकता के बीच की खाई

2030 का जलवायु लक्ष्य:

भारत का लक्ष्य **2030 तक 500 GW गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता** प्राप्त करना है, जिसमें से **250–280 GW** सौर ऊर्जा से प्राप्त होने की उम्मीद है।

आवश्यक बनाम वास्तविक वृद्धि:

इस लक्ष्य को पाने के लिए भारत को हर साल

लगभग 30 GW जोड़ना होगा, लेकिन वर्तमान में **केवल 17–23 GW प्रति वर्ष** जोड़े जा रहे हैं, जिससे क्षमता वृद्धि का लक्ष्य पीछे रह रहा है।

---

3. प्रमुख बाधाएँ और बाजार की वास्तविकताएँ

घरेलू लागत अधिक:

भारतीय सौर मॉड्यूल **चीनी मॉड्यूल्स से 1.5–2 गुना महंगे** हैं, क्योंकि भारत में उत्पादन का पैमाना छोटा है, **कच्चे माल (जैसे पॉलीसिलिकॉन)** की सीमित उपलब्धता है, और उत्पादन प्रक्रिया में **कम स्वचालन (automation)** है।

सीमित निर्यात:

क्षमता वृद्धि के बावजूद, भारत के सौर निर्यात सीमित हैं — **2024 में अमेरिका को केवल 4 GW**, जबकि **चीन ने 236 GW** का वार्षिक निर्यात किया।

अतिरिक्त क्षमता का जोखिम:

आने वाले वर्षों में घरेलू उत्पादन क्षमता के तेजी से बढ़ने के बावजूद, यदि नए अंतरराष्ट्रीय बाजार नहीं मिलते तो यह **अल्प उपयोग (underutilization)** का शिकार हो सकता है, जिससे **वित्तीय व्यवहार्यता** प्रभावित होगी।

---

4. सामरिक अवसर: अफ्रीका के रूप में नया विकास क्षेत्र

नया बाजार फोकस:

भारत **अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA)** के माध्यम से अफ्रीका में एक **विश्वसनीय सौर भागीदार** के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करना चाहता है, ताकि **चीन की बढ़त को संतुलित** किया जा सके।

घरेलू अनुभव का उपयोग:

भारत की सफल योजनाएँ जैसे **पीएम-कुसुम (सौर सिंचाई पंप)** और **पीएम सूर्य घर (रूफटॉप सोलर)** अफ्रीका की परिस्थितियों के अनुसार **मॉडल के रूप में लागू** की जा सकती हैं।

अफ्रीका की ऊर्जा आवश्यकताओं का समाधान:

अफ्रीका की केवल **4% कृषि भूमि सिंचित** है और ग्रामीण इलाकों में **ऊर्जा की भारी कमी** है। भारत द्वारा प्रदत्त **सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई पंपसेट और माइक्रो-ग्रिड समाधान** वहाँ कृषि उत्पादकता और ऊर्जा पहुंच को बढ़ा सकते हैं।

रणनीतिक लक्ष्य:

भारत का उद्देश्य अफ्रीका के सौर बाजार में **दूसरा सबसे विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता** बनना है — जिससे न केवल घरेलू सौर उद्योग को स्थायित्व मिलेगा, बल्कि **दक्षिण-दक्षिण ऊर्जा सहयोग** भी सशक्त होगा।

---

5. नीतिगत और रणनीतिक आगे का रास्ता

अनुसंधान एवं लागत दक्षता:

स्वदेशी सौर प्रौद्योगिकी, **ऊर्जा भंडारण समाधान** और **कच्चे माल के प्रसंस्करण** में निवेश कर **चीन पर निर्भरता घटाना** आवश्यक है।

घरेलू मांग को बढ़ावा देना:

रूफटॉप सोलर और विकेन्द्रीकृत सौर परियोजनाओं को मजबूत कर घरेलू उत्पादन क्षमता को **अवशोषित** किया जा सकता है।

MENTORA IAS "YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

निर्यात बाजारों का विविधीकरण:

ISA मंच का उपयोग कर भारत को **अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका** में नए बाजार तलाशने चाहिए।

नीतिगत स्थिरता:

पूर्वानुमेय टैरिफ और सब्सिडी संरचना बनाए रखना निवेश को प्रोत्साहित करेगा और **दीर्घकालिक औद्योगिक विश्वास** स्थापित करेगा।

निष्कर्ष

भारत की सौर क्रांति उसके **सतत विकास और जलवायु नेतृत्व के प्रति प्रतिबद्धता** का प्रतीक है। किंतु इस प्रगति को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि **महत्त्वाकांक्षा और कार्यान्वयन के बीच की खाई** को नवाचार, बाजार विविधीकरण और क्षेत्रीय सहयोग से पाटा जाए। अफ्रीका जैसे उभरते बाजारों में अवसरों का दोहन कर भारत न केवल अपनी अर्थव्यवस्था को सशक्त बना सकता है, बल्कि **वैश्विक हरित कूटनीति का एक स्तंभ** भी बन सकता है।

How to use it

भारत की सौर ऊर्जा यात्रा एक सफल नीति-प्रेरित औद्योगिक परिवर्तन का उत्कृष्ट उदाहरण है, लेकिन अब इसे घरेलू क्षमता निर्माण से वैश्विक रणनीतिक प्रतिस्पर्धा की ओर बढ़ने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। इस क्षेत्र का भविष्य लागत संबंधी असमानताओं को दूर करने, आपूर्ति श्रृंखलाओं को सुरक्षित करने और अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) जैसे कूटनीतिक उपकरणों का उपयोग कर एक स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र बनाने पर निर्भर करेगा।

मुख्य प्रासंगिकता:

सामान्य अध्ययन पत्र–III (अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, सुरक्षा)

---

1. अवसंरचना: ऊर्जा, बंदरगाह, सड़कें, हवाईअड्डे, रेलमार्ग आदि

कैसे उपयोग करें:

यह सबसे प्रत्यक्ष अनुप्रयोग है। सौर ऊर्जा भारत की ऊर्जा अवसंरचना का एक महत्वपूर्ण घटक है।

मुख्य बिंदु:

- **असाधारण वृद्धि:** भारत का रूपांतरण—एक सीमांत खिलाड़ी से विश्व का तीसरा सबसे बड़ा सौर ऊर्जा उत्पादक—दिखाएँ। सितंबर 2025 तक ~117 GW की स्थापित क्षमता और 100 GW की अनुमानित विनिर्माण क्षमता का उल्लेख करें।
- **लागत क्रांति:** 2017 के आसपास सौर ऊर्जा का कोयले से सस्ता होना एक **टर्निंग पॉइंट** था, जिसने निजी निवेश को आकर्षित किया और उद्योग को व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य बनाया।

---

2. संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण एवं क्षरण, पर्यावरणीय प्रभाव मूल्यांकन

कैसे उपयोग करें:

सौर ऊर्जा भारत की जलवायु प्रतिबद्धताओं का केंद्र है।

मुख्य बिंदु:

- **जलवायु लक्ष्य:** सौर ऊर्जा को भारत के **'पंचामृत' लक्ष्यों** से जोड़ें — 2030 तक 500 GW गैर-जीवाश्म ईंधन क्षमता प्राप्त करने के लक्ष्य में से 250–280 GW सौर से आना है।
- **महत्वाकांक्षा बनाम वास्तविकता का अंतर:** भारत को हर वर्ष लगभग **30 GW नई सौर क्षमता** जोड़नी चाहिए, जबकि वर्तमान वृद्धि दर केवल **17–23 GW प्रति वर्ष** है — यह अंतर लक्ष्य प्राप्ति की कठिनाई को रेखांकित करता है।

---

3. भारतीय अर्थव्यवस्था और संसाधनों की योजना, संचयन, वृद्धि, विकास और रोजगार से संबंधित मुद्दे

कैसे उपयोग करें:

सौर क्षेत्र एक **रणनीतिक उद्योग** है, जिसके आर्थिक और भू-राजनीतिक दोनों आयाम हैं।

मुख्य बिंदु:

- **रणनीतिक औद्योगिक नीति:** सरकार की **उत्पादन-संयुक्त प्रोत्साहन (PLI) योजना** घरेलू सौर मॉड्यूल निर्माण को बढ़ावा देने और चीन पर आयात निर्भरता घटाने का मुख्य साधन है।
- **चीन चुनौती:** भारतीय मॉड्यूल चीनी मॉड्यूल की तुलना में **1.5 से 2 गुना महंगे** हैं क्योंकि चीन संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला (जैसे पॉलीसिलिकॉन) पर नियंत्रण रखता है और पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं का लाभ उठाता है।
- **निर्यात-उन्मुख विकास रणनीति:** अत्यधिक घरेलू क्षमता के चलते **अधिशेष जोखिम** बढ़ सकता है, इसलिए नए बाजारों की तलाश आवश्यक है।
  अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) को **आर्थिक कूटनीति का साधन** बताइए — अफ्रीकी बाजार में प्रवेश के लिए, भारत अपने सफल मॉडल जैसे **पीएम-कुसुम** और **पीएम सूर्य घर** को वहां लागू कर सकता है।

द्वितीयक प्रासंगिकता:

सामान्य अध्ययन पत्र–II (शासन, अंतरराष्ट्रीय संबंध)

---

1. विकास हेतु सरकारी नीतियाँ और हस्तक्षेप

कैसे उपयोग करें:

सौर ऊर्जा की सफलता का पूरा श्रेय **लक्षित सरकारी नीतियों** को जाता है।

मुख्य बिंदु:

- प्रमुख योजनाओं का उल्लेख करें — **राष्ट्रीय सौर मिशन (NSM)**, **पीएम-कुसुम (कृषि सौर सिंचाई हेतु)**, और

पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना (घरेलू छतों पर सौर ऊर्जा)।

---

2. भारत से संबंधित या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक संगठन / समझौते

कैसे उपयोग करें:

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) भारत की प्रमुख कूटनीतिक पहल है।

मुख्य बिंदु:

- ISA को भारत की **सॉफ्ट पावर पहल** के रूप में प्रस्तुत करें — यह दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ावा देता है, वैश्विक सौर एजेंडा में भारत को नेतृत्व दिलाता है, और इसकी सौर उद्योग के लिए नए बाजार बनाता है।
- इसे **चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** के **हरित विकल्प** के रूप में भी देखा जा सकता है।

वैश्विक तेल मूल्यों में गिरावट से भारत को मिलने वाली अनुकूलताएँ (The Tailwinds from Lower Global Oil Prices and Their Impact on India)

परिचय (Introduction)

वैश्विक तेल बाज़ार वर्तमान में एक संरचनात्मक परिवर्तन से गुजर रहा है, जो आपूर्ति–मांग की बदलती गतिशीलता और तकनीकी नवाचारों द्वारा संचालित है। विश्व के **तीसरे सबसे बड़े तेल आयातक** के रूप में भारत, उत्पादक देशों के बीच चल रही प्रतिस्पर्धा और घटते मूल्यों से काफी लाभान्वित हो सकता है। हालांकि, इन अनुकूल परिस्थितियों के साथ **रणनीतिक और आर्थिक चुनौतियाँ** भी जुड़ी हैं।

---

1. वर्तमान तेल बाज़ार की प्रतिस्पर्धा (The Current Oil Market Battle)

- **OPEC-प्लस** (सऊदी अरब और रूस के नेतृत्व में) और **गैर-OPEC निर्यातक देशों** — जैसे अमेरिका, कनाडा, ब्राज़ील, गुयाना, और अर्जेंटीना — के बीच अब एक नई प्रतिस्पर्धा शुरू हो गई है।
- उपभोक्ता देश, विशेषकर **भारत और चीन**, अब बाज़ार की दिशा तय करने में निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं।
- इस प्रतिस्पर्धा का परिणाम भारत जैसे **ऊर्जा-आयातक देशों** के लिए प्रत्यक्ष आर्थिक लाभ में परिवर्तित हो सकता है।

---

2. प्रमुख बाज़ार रुझान: आपूर्ति बनाम मांग (Key Market Trends: Supply vs Demand)

(a) आपूर्ति-पक्षीय कारक (Supply-Side Factors)

- **शेल तेल**, **क्षैतिज ड्रिलिंग**, और **अल्ट्रा-डीपवॉटर एक्सप्लोरेशन** जैसी तकनीकी प्रगतियों ने वैश्विक उत्पादन क्षमता को बढ़ाया है।

- वैश्विक कच्चे तेल का उत्पादन **5.6 मिलियन बैरल प्रति दिन (mbpd)** बढ़ा है, जिसमें **OPEC का योगदान 3.1 mbpd** रहा है क्योंकि उसने कोविड-कालीन कटौती को वापस ले लिया है।
- अमेरिका, कनाडा, ब्राज़ील, गुयाना, और अर्जेंटीना इस उत्पादन वृद्धि के प्रमुख योगदानकर्ता हैं।

(b) मांग-पक्षीय कारक (Demand-Side Factors)

- कोविड के बाद की **मंदी**, **इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs)** की बढ़ती हिस्सेदारी, और **जलवायु परिवर्तन लक्ष्यों** ने वैश्विक मांग वृद्धि को सीमित कर दिया है।
- **OECD देशों** में मांग स्थिर है, जबकि **चीन** में आर्थिक मंदी और EVs के आधे वाहन बिक्री हिस्से के कारण खपत कमजोर है।
- 2025 के लिए **वैश्विक मांग वृद्धि दर केवल 1.2% (1.3 mbpd)** रहने का अनुमान है, जिसमें विकसित अर्थव्यवस्थाओं का योगदान मात्र 10% है।

---

3. मूल्य प्रभाव और बाज़ार गतिशीलता (Price Impact and Market Dynamics)

- बढ़ती आपूर्ति के चलते **ब्रेंट क्रूड की कीमतों में 16% की गिरावट** आई है, जो अब **$61 प्रति बैरल** पर पहुँच गई है।
- हालांकि, यह गिरावट **दो कारणों से सीमित** रही है:
  - उपभोक्ता देशों द्वारा **रणनीतिक भंडारण (Strategic Stockpiling)**,
  - उत्पादकों द्वारा **100 मिलियन बैरल से अधिक तेल को टैंकरों में रोककर रखना**।

परस्पर विरोधी पूर्वानुमान (Conflicting Forecasts):

- **OPEC** का अनुमान: आपूर्ति की कमी (supply shortfall) होगी।
- **IEA और अन्य विश्लेषक:** लगभग **4 mbpd की अधिशेष आपूर्ति (surplus)** की भविष्यवाणी कर रहे हैं, जिससे कीमतें **$50 प्रति बैरल** तक गिर सकती हैं।

---

4. भू-राजनीतिक और आर्थिक अनिश्चितताएँ (Geopolitical and Economic Imponderables)

- **भू-राजनीतिक व्यवधान (Disruptors):** रूस, ईरान और वेनेजुएला पर से प्रतिबंधों का हटना, पश्चिम एशिया में नए संघर्ष, तथा अमेरिका-चीन व्यापार तनाव तेल कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं।
- **आर्थिक दृष्टिकोण:** IMF की *World Economic Outlook (2025-26)* के अनुसार, वैश्विक अर्थव्यवस्था में हल्की मंदी और व्यापार वृद्धि में गिरावट की संभावना है, जिससे तेल कीमतों पर और दबाव पड़ेगा।

5. भारत के लिए परिदृश्य और जोखिम (The Outlook and Risks for India)

(a) शुद्ध सकारात्मक प्रभाव (Net Positive Impact)

तेल कीमतों और अमेरिकी डॉलर दोनों में गिरावट ने भारत की अर्थव्यवस्था के लिए **दोहरे लाभ (dual windfall)** की स्थिति बनाई है।

मुख्य लाभ:

- **चालू खाता घाटा (CAD) में सुधार:** तेल के प्रत्येक $1 गिरने से भारत के CAD में लगभग **$1.6 अरब का सुधार** होता है।
- **सब्सिडी बोझ और मुद्रास्फीति में कमी:** कम तेल कीमतों से सरकार का सब्सिडी व्यय घटता है और मुद्रास्फीति स्थिर होती है।
- **राजकोषीय संतुलन और वृद्धि:** आयात बचत से पूंजीगत व्यय (capital expenditure) और सार्वजनिक निवेश बढ़ाने की गुंजाइश मिलती है।
- **रणनीतिक स्वायत्तता:** तेल अधिशेष की स्थिति भारत की **रूसी सस्ते तेल पर निर्भरता** को घटा सकती है, जिससे अमेरिका व पश्चिमी देशों के साथ घर्षण कम होगा।

(b) उभरते जोखिम (Emerging Risks)

- **प्रेषण एवं निर्यात पर प्रभाव:** यदि पश्चिम एशिया के तेल-आधारित देशों की आय घटती है, तो भारत के **प्रवासी प्रेषण, व्यापार, और निवेश** पर नकारात्मक असर पड़ सकता है।
- **चक्रीय अनिश्चितता (Cyclical Uncertainty):** तेल बाज़ार अत्यंत चक्रीय है, अतः वर्तमान राहत **अस्थायी** भी हो सकती है।

6. नीति सुझाव (Policy Recommendation)

भारत को इस समय आत्मसंतोष से बचते हुए निम्न कदम उठाने चाहिए:

- **ऊर्जा विविधीकरण:** राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन के तहत **नवीकरणीय ऊर्जा** में निवेश बढ़ाना।
- **रणनीतिक तेल भंडार (SPR) का विस्तार:** इस कम मूल्य अवधि में भंडार भरना।
- **घरेलू EV और ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना:** भविष्य के तेल झटकों से बचाव हेतु।
- **ऊर्जा कूटनीति को सुदृढ़ करना:** OPEC और गैर-OPEC दोनों देशों के साथ दीर्घकालिक आपूर्ति समझौते सुनिश्चित करना।

निष्कर्ष (Conclusion)

वैश्विक तेल बाज़ार का वर्तमान पुनर्संरेखण भारत के लिए एक **अद्वितीय व्यापक आर्थिक अवसर** प्रस्तुत करता है — **कम आयात बिल**, **स्थिर मुद्रास्फीति**, और **राजकोषीय राहत**। फिर भी, तेल बाजार की **अंतर्निहित अस्थिरता**

सतर्कता की मांग करती है।
भारत को इस अवसर का उपयोग **ऊर्जा संक्रमण में तेजी**, **बाह्य संतुलन के सुदृढ़ीकरण**, और **भविष्य के तेल झटकों के विरुद्ध लचीलापन निर्माण** के लिए करना चाहिए।

How to use it

वैश्विक तेल कीमतों में आई गिरावट भारत के लिए एक **महत्वपूर्ण व्यापक आर्थिक अवसर (macroeconomic opportunity)** प्रस्तुत करती है।
हालांकि, यह एक **चक्रीय राहत (cyclical windfall)** है — कोई स्थायी समाधान नहीं।
भारत के लिए रणनीतिक चुनौती यह है कि वह इस अस्थायी राहत का उपयोग अपने **राजकोषीय स्वास्थ्य (fiscal health)** को मजबूत करने और **दीर्घकालिक ऊर्जा संक्रमण (energy transition)** को तेज करने में करे, बजाय इसके कि नीतिगत आत्मसंतोष (policy complacency) में फँस जाए।

प्राथमिक प्रासंगिकता: GS पेपर–III (भारतीय अर्थव्यवस्था)

---

1. भारतीय अर्थव्यवस्था और योजना, संसाधनों का संmobilization, विकास एवं रोजगार से संबंधित मुद्दे

कैसे उपयोग करें: यह सबसे प्रत्यक्ष अनुप्रयोग है, क्योंकि तेल मूल्यों का प्रभाव कई व्यापक आर्थिक संकेतकों पर पड़ता है।

मुख्य बिंदु (Key Points):

(a) राजकोषीय प्रबंधन (Fiscal Management):

- **सब्सिडी बोझ में कमी:** घटती तेल कीमतें सरकार के **एलपीजी, मिट्टी तेल जैसी ईंधन सब्सिडियों** पर व्यय को कम करती हैं, जिससे **राजकोषीय संसाधन मुक्त** होते हैं।
- **राजकोषीय लचीलापन (Fiscal Space):** बचाए गए संसाधनों को **अवसंरचना (जैसे PM Gati Shakti)** और **सामाजिक क्षेत्रों** में पूंजीगत व्यय के रूप में पुनर्निर्देशित किया जा सकता है, जिससे दीर्घकालिक विकास को बढ़ावा मिलेगा।

(b) बाह्य क्षेत्र (External Sector):

- **चालू खाता घाटा (CAD):** तेल कीमतों में प्रत्येक $1 की गिरावट से भारत के CAD में लगभग **$1.6 अरब का सुधार** होता है। यह वैश्विक वित्तीय झटकों के प्रति भारत की संवेदनशीलता को कम करता है और रुपये को मजबूत बनाता है।
- **मुद्रास्फीति नियंत्रण:** कम तेल कीमतें **ईंधन और परिवहन लागत** घटाती हैं, जिससे **मुख्य मुद्रास्फीति** पर नियंत्रण रहता है। यह **भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI)**

को विकास-उन्मुख मौद्रिक नीतियाँ बनाए रखने की अधिक स्वतंत्रता देता है।

---

2. उदारीकरण के प्रभाव, औद्योगिक नीति में परिवर्तन और औद्योगिक विकास पर असर

कैसे उपयोग करें: तेल कीमतों में गिरावट सभी उद्योगों के उत्पादन लागत को प्रभावित करती है।

मुख्य बिंदु:

- घटते तेल मूल्य **उत्पादन और परिवहन लागत** को कम करते हैं, जिससे **निर्माण, कृषि और सेवा क्षेत्र** की लाभप्रदता में वृद्धि होती है।
- इससे **कॉर्पोरेट निवेश और औद्योगिक विस्तार** को प्रोत्साहन मिल सकता है, जिससे रोजगार सृजन की संभावना बढ़ती है।

---

3. अवसंरचना: ऊर्जा (Infrastructure: Energy)

कैसे उपयोग करें: यह ऊर्जा सुरक्षा योजना के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण है।

मुख्य बिंदु:

- **रणनीतिक तेल भंडार (SPR):** कम कीमतों के दौर में भारत को अपने **स्ट्रैटेजिक पेट्रोलियम रिज़र्व (SPR)** भरने चाहिए — यह भविष्य के आपूर्ति व्यवधानों और मूल्य वृद्धि के विरुद्ध एक सुरक्षा कवच है।
- **ऊर्जा संक्रमण (Energy Transition):** वर्तमान मूल्य राहत का उपयोग **नवीकरणीय ऊर्जा (सौर, पवन)** और **राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन** में निवेश बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए ताकि भारत की दीर्घकालिक **जीवाश्म ईंधन निर्भरता** कम हो सके।

द्वितीयक प्रासंगिकता: GS पेपर–II (शासन एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध)

---

1. विभिन्न क्षेत्रों में विकास हेतु सरकारी नीतियाँ और हस्तक्षेप

कैसे उपयोग करें: सरकारी नीति प्रतिक्रिया इस लाभ को अधिकतम करने की कुंजी है।

मुख्य बिंदु:

- **इलेक्ट्रिक वाहनों (EVs)** को अपनाने और **ऊर्जा दक्षता** को प्रोत्साहित करने वाली नीतियों की आवश्यकता है।
- इससे दीर्घकालिक रूप से **तेल मांग में कमी** आएगी और भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता बढ़ेगी।

---

2. द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह / समझौते जो भारत के हितों को प्रभावित करते हैं

कैसे उपयोग करें: बदलते तेल समीकरण भारत की **कूटनीतिक स्थिति** को प्रभावित करते हैं।

मुख्य बिंदु:

- **रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy):** वैश्विक तेल अधिशेष भारत की किसी एक आपूर्तिकर्ता (जैसे

रूस) पर निर्भरता घटाता है। इससे भारत बेहतर शर्तों पर आयात समझौते कर सकता है।

- **ऊर्जा कूटनीति (Energy Diplomacy):** भारत को इस अवधि का उपयोग **OPEC और गैर-OPEC देशों** (जैसे अमेरिका, कनाडा) के साथ दीर्घकालिक आपूर्ति समझौते मजबूत करने में करना चाहिए।

झटका, भय, आतंक: कैसे दलित कहानियाँ साहित्यिक जगत को झकझोर रही हैं

मुख्य विषय (Central Theme):
दलित आत्मकथाओं का उदय एक शक्तिशाली साहित्यिक और समाजशास्त्रीय उपकरण के रूप में हुआ है, जो गहराई से जड़ जमाए जातिगत उत्पीड़न, सामाजिक बहिष्कार और विशेषकर महार समुदाय के दलितों के जीवन की यथार्थ स्थितियों को उजागर करता है।

प्रमुख लेखक और रचनाएँ

लेखक	कृति (वर्ष, भाषा)	केन्द्र / योगदान
दया पवार	*बलूता* (1978, मराठी)	दलित आत्मकथा की अग्रणी रचना; महार जीवन का नग्न और यथार्थ चित्रण, जातिगत अपमान और निर्धनता पर मौन तोड़ने वाली रचना।
बेबी कांबले	*जेंव्हा आमचं जातं बांधलं* (*The Prisons We Broke*) (1986, मराठी)	महार महिला की पहली आत्मकथा; जाति और लिंग के दोहरे उत्पीड़न का चित्रण; पितृसत्तात्मक रीति-रिवाजों की आलोचना।
दादू मंद्रेकर	*Untouchable God* (1997, मराठी)	गोवा और कोंकण क्षेत्र के दलितों की उपेक्षित वास्तविकता को सामने लाने वाली कृति; अमानवीय रीति-रिवाजों, जाति-चिह्नों और सामाजिक उपेक्षा का दस्तावेज़।

मुख्य विषय और समाजशास्त्रीय अंतर्दृष्टि

1. जाति आधारित निर्धनता और उत्पीड़न

- तीनों आत्मकथाएँ दलितों के जीवन में सम्मान और अवसरों की अनुपस्थिति को उजागर करती हैं।
- जाति व्यवस्था उन्हें अपमानजनक कार्यों और अलग बस्तियों तक सीमित रखती है।
- यह लुई ड्यूमॉन्ट के *Homo Hierarchicus* सिद्धांत को दर्शाता है—जहाँ सामाजिक श्रेणीकरण पवित्रता और अपवित्रता के सिद्धांत पर आधारित है।

2. अमानवीय रीति-रिवाज और परंपराएँ

- मंद्रेकर ने *Cade* जैसी भयावह प्रथाओं का वर्णन किया है (शवों का उत्खनन और सार्वजनिक प्रदर्शन)।
- यह दर्शाता है कि "अस्पृश्यता" मृत्यु के बाद भी समाप्त नहीं होती।
- एम.एन. श्रीनिवास के *Ritual Degradation* सिद्धांत को पुष्ट करता है—जहाँ अनुष्ठानिक प्रथाएँ नियंत्रण का माध्यम बनती हैं।

3. शोषणकारी अंधविश्वास

- मिथकों और धार्मिक कथाओं का उपयोग दलितों को अधीन बनाए रखने के लिए किया गया।
- त्यौहारों में *ढोल बजाने* या *स्वयं को चोट पहुँचाने* जैसी प्रथाएँ दिखाती हैं कि धर्म श्रम के शोषण को वैधता देता है।
- यह डॉ. आंबेडकर की उन आलोचनाओं से मेल खाता है जिसमें उन्होंने हिंदू धर्मग्रंथों को सामाजिक अधीनता के औज़ार के रूप में देखा।

4. लिंग और जाति का अंतर्संबंध (Intersectionality)

- बेबी कांबले दिखाती हैं कि दलित महिलाएँ "दोहरी हाशियाकरण" (जाति + पितृसत्ता) का सामना करती हैं।
- घरेलू जीवन भी जातिगत उत्पीड़न का सूक्ष्म रूप है।
- यह शर्मिला रेगे की *Dalit Feminist Standpoint* अवधारणा से मेल खाता है।

5. विभाजन और जाति-चिह्न (Caste Markers)

- दलित बस्तियाँ मुख्य गाँवों से अलग बसी होती हैं।
- विशिष्ट वस्तुएँ, गंध, और रीति-रिवाज पहचान के चिह्न बनते हैं।
- यह जी.एस. घुर्ये के *Segmented Social Order* और *Endogamy* के विश्लेषण को पुष्ट करता है।

6. शिक्षित दलितों की आलोचना

- कांबले और अन्य लेखक प्रश्न उठाते हैं कि क्या शिक्षा ने वास्तव में दलितों को मुक्त किया है।
- शिक्षित दलित प्रायः सरकारी पदों पर पहुँचकर भी अपने समुदाय की स्थिति सुधारने में विफल रहते हैं।
- यह डॉ. आंबेडकर की *Elite Co-optation* संबंधी चिंता को प्रतिध्वनित करता है।

🌱 **समाजशास्त्रीय महत्व (Sociological Significance)**

- ये आत्मकथाएँ केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं, बल्कि **प्रतिरोध और पहचान की गवाही** हैं।
- ये भारतीय आधुनिकता और विकास की मुख्यधारा की कहानियों को **विघटित** करती हैं, जो दलित वास्तविकताओं को अनदेखा करती हैं (विशेषकर गोवा की स्थिति)।
- ये **ब्राह्मणवादी इतिहास-लेखन और जाति की अदृश्यता** को चुनौती देने वाले वैकल्पिक विमर्श प्रस्तुत करती हैं।

📚 **व्यापक निहितार्थ (Broader Implications)**

** आयाम **	** प्रभाव **
सांस्कृतिक	उच्चवर्णीय साहित्यिक वर्चस्व से दलित आवाज़ को पुनः प्राप्त करना।
समाजशास्त्रीय	यह दिखाता है कि जाति किस प्रकार व्यवहार, अनुष्ठान और स्थानिक विभाजन के माध्यम से जी जाती है और पुनरुत्पादित होती है।
राजनीतिक	आंबेडकरवादी विचारधारा से जुड़ाव—गरिमा, मानवाधिकार और प्रतीकात्मक सुधारवाद की आलोचना।
लैंगिक	दलित नारीवादी चेतना की नींव रखती हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

दया पवार, बेबी कांबले और दादू मंद्रेकर की दलित आत्मकथाएँ भारतीय साहित्य में क्रांतिकारी बदलाव लेकर आईं। उन्होंने **व्यक्तिगत पीड़ा को राजनीतिक विमर्श** में बदल दिया। ये रचनाएँ मिथक, स्मृति और प्रतिरोध को मिलाकर समाज को उस विरोधाभास से रूबरू कराती हैं, जहाँ भारत की प्राकृतिक सुंदरता तो दिखती है, परंतु उसके दलितों के प्रति नैतिक असफलता भी उजागर होती है।

To join our ANSWER WRITING PLANS at affordable price

Visit – www.mentoraias.co.in

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"